अध्याय-3

प्रारंभिक समाज

रितेश और प्रकाश आपस में बात कर रहे थे।

रितेश : प्रकाश, यह बताओ कि मानव इस धरती पर कैसे आए?

प्रकाश : मेरे पापा–मम्मी कहते हैं कि हम सभी ईश्वर की संतान हैं और उसी ने हमें धरती पर भेजा।

रितेश : लेकिन मैंने तो कल के अखबार में पढ़ा है कि इस धरती पर जीवन की उत्पत्ति सर्वप्रथम समुद्र में हुई और फिर छोटे जीव से बड़े जीवों का विकास हुआ जिसमें मानव भी है।

प्रकाश : तब हमारे पूर्वज कौन थे, देखने में कैसे लगते थे और मानव का प्रारंभिक जीवन कैसा था?

मनुष्य जिस तरह से आज रहता है उससे तो आप परिचित है। लेकिन क्या आपने सोचा है, कि हमारे पूर्वज हजारों वर्ष पहले कैसे रहते थे? उस समय दुनिया भर में कहीं भी खेती नहीं होती थी। न कहीं गाँव थे, न शहर। आज से 150 साल पहले तक लोगों का मानना था कि पृथ्वी पर प्रारंभ से ही जीवन था। पेड़ पौधे और मनुष्य को बनाने वाला ईश्वर था। लेकिन बाद में वैज्ञानिकों ने इस बात की खोज की, कि पृथ्वी पर करोड़ों वर्ष पहले जीवन की उत्पत्ति हुई और उसका स्वरूप धीरे–धीरे बदलता रहा। कहा जाता है कि मनुष्य जिस रूप में आज हैं वह लाखों वर्षों के क्रमबद्ध विकास का परिणाम है।

आरंभिक मानव के बारे में जानकारी कैसे मिलती है?

हजारों साल पहले जो लोग रहते थे, उनके बारे में हम ठीक–ठीक तो नहीं जानते है। लेकिन उस समय की बची हुई चीजों को देखकर और अपनी सूझबूझ से कुछ अनुमान जरूर कर सकते है। इस काम में पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा उस समय के लोगों के द्वारा प्रयोग में लाए

जाने वाले औजारों (पत्थरों से बनायी गई) कलाकृतियों एवं उनके निवास स्थानों का जो पता लगाया गया है, वह सहायक है। इस विषय में आप पिछले अध्याय में पढ़ चुके हैं। उस समय के लोगों की जीवन–शैली को जानने के लिए आज भी उसी माहौल में रह रहे शिकारी समाज के लोगों का विद्वानों ने अध्ययन किया है। आज भी दुनिया के कई जगहों में शिकारी समाज के लोग रहते है। भारत में केरल, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश तथा झारखण्ड आदि प्रदेशों में ऐसे लोग रहते है।

भारत में आरंभिक मानव कहाँ रहते थे ?

भारत में पुरातत्ववेताओं को अतीत की कई मानव बस्तियाँ मिली है। दिए गए मानचित्र में त्रिकोण वाले स्थान वहीं है। इन सभी स्थलों से शिकारी मानव के कई निशान मिले है।

जैसे पत्थर के औजार गुफाओं पर बने चित्र और जानवरों तथा लोगों की हड्डियाँ। गुफा ही उनका बसेरा था। मध्य प्रदेश में भीमबेटका, बुदनी, पंचमढ़ी, भेंडाघाट और महेश्वर उन स्थलों के उदाहरण है। कई पुरास्थल नदियों और झीलों के किनारे पाए गए है।
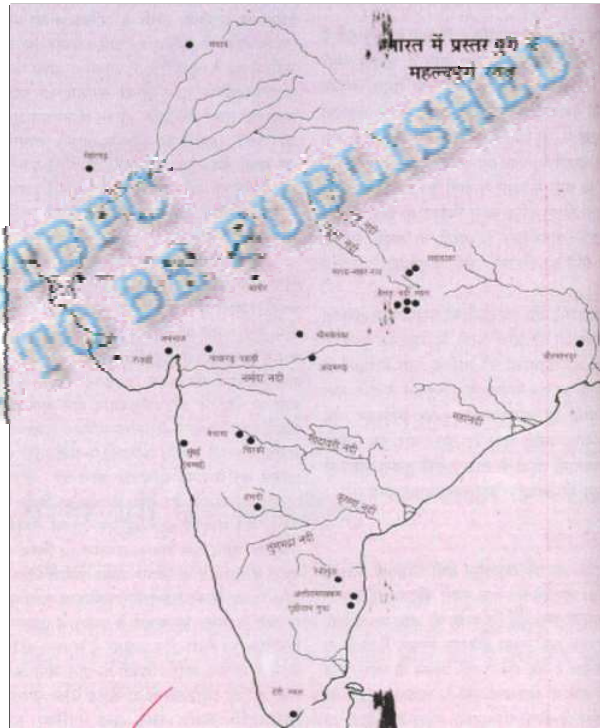
मानचित्र महत्वपूर्ण पुरास्थल

आरंभिक मानव की जीवन शैली

दुनिया में जगह जगह वे लोग जंगलों में बीस–तीस लोगों के छोटे–छोटे झुण्ड में रहा करते थे। जंगल में हिरण, भैसा, शेर, खरगोश आदि जानवरों का शिकार करते थे।नदियों एवं तालाबों में मछली पकड़ते थे। मधुमक्खी के छत्तों से शहद भी इकट्ठा करते थे। वे जंगली पेड़ों के फल तोड़ लाते पौधों की मीठी जड़े और कंद–मूल (आलू, शकरकन्द जैसे) खोद लाते

और जंगलों में अपने आप उगे जंगली अनाज को काट लाते। वे ज्यादातर कन्द, फल आदि खाते साथ ही थोड़ा बहुत मांस भी। मांस उनका मुख्य भोजन नहीं था क्योंकि उनलोगों के जैसे औजार मिले है उससे बड़ी संख्या में जंगली जानवरों का शिकार करना बहुत कठिन रहा होगा। दूसरे, जानवर उनसे ज्यादा शक्तिशाली और तेज दौड़ने वाले भी थे।
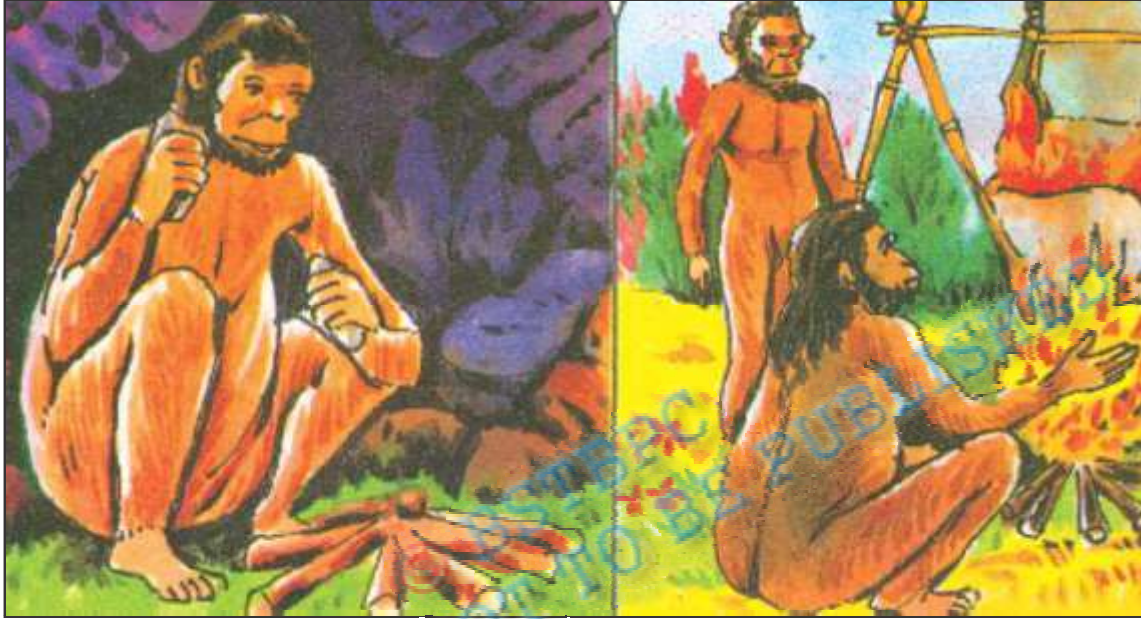
आरंभिक मानव द्वारा आग का इस्तेमाल
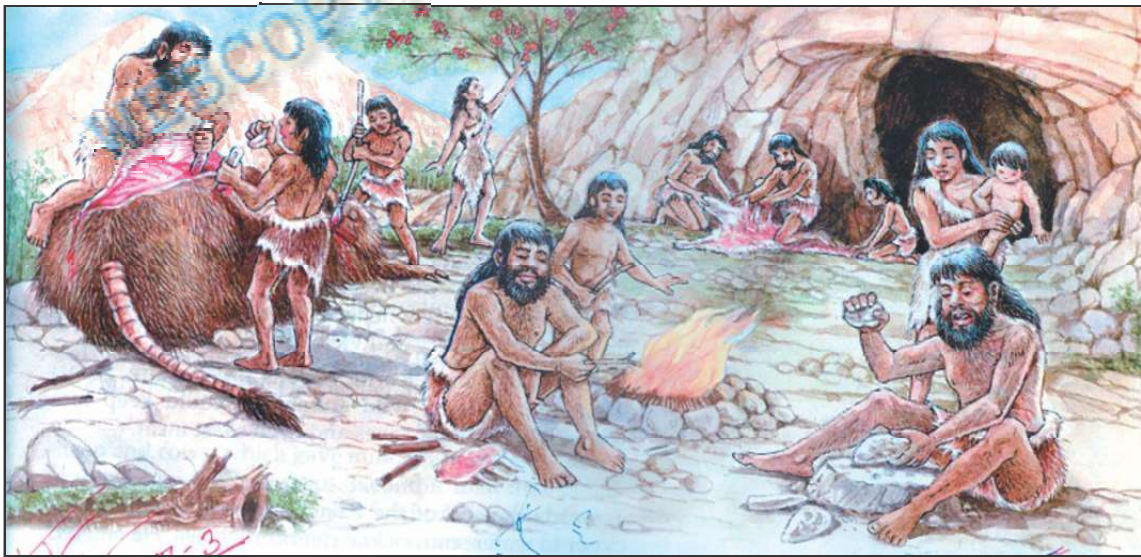
आरंभिक मानव का जीवन

आरंभिक मानव को पहनने की चीजें भी जानवरों और पेड़ों से ही मिलती थीं। वे जानवरों की खाल साफ करके पहनते थे या पेड़ की पत्तियों और छाल से शरीर ढंक लेते थे। वे या तो पहाड़ी गुफाओं में रहते या पेड़ों की डालियों और पत्ती से छोटी–छोटी झोपड़ियाँ खड़ी कर लेते थे। वे लोग आग जलाना जान गए थे। उनके घरों में जो चूल्हे मिले हैं, उससे पता चलता है कि वे नियमित रूप से आग का इस्तेमाल करते थे। लोगों के झुण्ड में महिलाएं और बच्चे भी रहते थे। पुरुष शिकार के लिए जाते जबकि महिलाएं कंद–मूल, फल और अन्य जंगली अनाज इकट्ठा करतीं। समूह के लोग बच्चों का खास ख्याल रखते थे।

बाँट कर खाना

आरंभिक लोग साथ–साथ शिकार करते थे क्योंकि अकेले जानवरों को मारना कठिन होता था। भोजन लोगों द्वारा समूह में ही इकट्ठा किया जाता था और उसे सब लोग मिल बांट कर खाते थे। यह बहुत जरूरी था, क्योंकि जंगल से क्या मिलेगा इसका पक्का भरोसा तो होता नहीं था। उस समय लोगों के कई समूह अलग–अलग क्षेत्रों में रहते थे। उनके बीच शिकार और भोजन प्राप्ति को लेकर छोटी–मोटी लड़ाइयाँ भी होती थीं। कुल मिलाकर उस समय के लोगों का जीवन बहुत आराम से बीतता होगा। मुख्य काम भोजन इकट्ठा करना था जो जंगल से प्राप्त हो जाता। इसके लिए उन्हें बहुत अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता था।

आरंभिक मानव के जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष इधर–उधर घूमना

एक समूह में रहने वाले आरंभिक मानव एक सीमित क्षेत्र के भीतर घूमते–फिरते रहते थे। यह दायरा उनके निवास स्थल से चारों दिशाओं में होता। ये लोग छोटे–छोटे समूहों में बंटकर चारों दिशाओं में जाते, इसके पीछे एक निश्चित वजह होती थी। जैसे एक खास क्षेत्र में फलों–पौधों और जानवरों की संख्या और उपलब्धता सीमित रहती थी, जिसे वे समाप्त कर देते थे। अतः भोजन की तलाश में वे इधर–उधर घूमते थे। वे जानवरों के शिकार करने के क्रम में भी उनके पीछे–पीछे चले जाते। उन लोगों को पेड़–पौधों में फल–फूल आने का मौसम पता था। इसलिए लोग उनकी तलाश में उपयुक्त मौसम के अनुसार दूसरे क्षेत्रों में घूमते थे। संभवतः आस–पास के जल स्रोतो जैसे नदियों, झीलों आदि के सूख जाने के कारण

भी पानी की तलाश में इधर–उधर जाते होंगे। वे लोग अपनी यात्रा पैदल ही किया करते थे।

आरंभिक मानव के औजार

शिकारी मानव के पास कैसे–कैसे हथियार व औजार थे जरा सोचे। उस समय लोहा, ताँबा जैसी धातुओं के बारे में लोगों को पता नहीं था। अतः उनलोगों को आस–पास जो मिलता वह था, पत्थर, लकड़ी, जानवरों के सींग और हड्डियाँ, इन्हीं को नुकीला बनाकर वे औजार बनाते थे। वे पत्थर के टुकड़े, को घिसकर नुकीला और धारदार बना देते थे साथ ही वह आकार में भी हाथ से पकड़ने के लायक औजारों को बनाते थे। धीरे–धीरे वे इस कला में माहिर होते गए और पत्थर के बारीक औजार बनाने लगे। वे पत्थर के छोटे और बारीक टुकड़ों को किसी लकड़ी के हत्थे पर लगा कर तेज औजार का काम लेते थे। उस समय औजार बनाने के लिए अलग से कोई कारीगर नहीं था। समूह के सब लोग औजार बनाया करते थे। पत्थर और लकड़ी के औजारों का उपयोग शिकार,

आरंभिक मानव के औजार
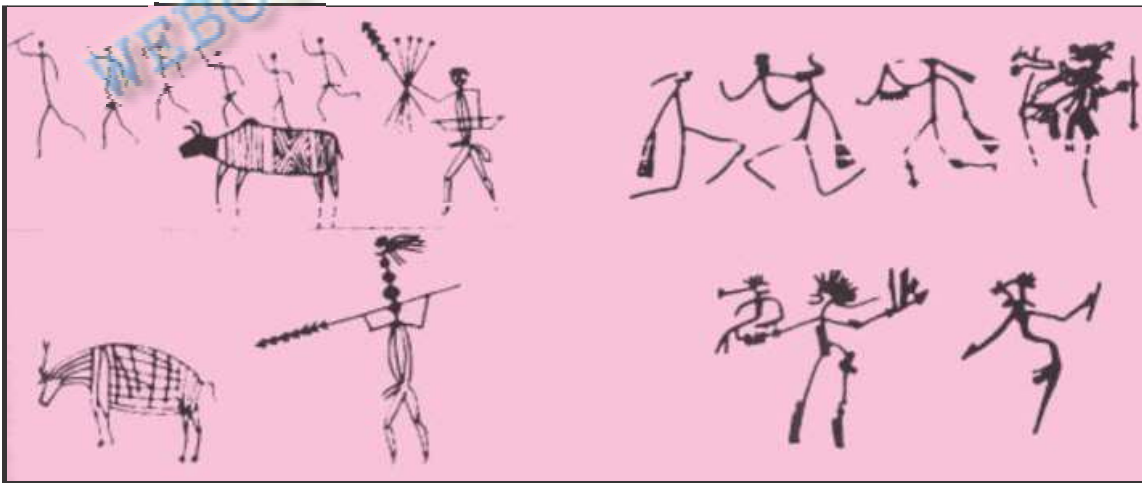
आरंभिक मानव द्वारा बनाए गए चित्र

पेड़ों को काटने या उनकी छाल छीलने, जानवरों के खाल उतारकर पहनने लायक बनाने, इत्यादि कामों में करते थे। वे लकड़ी, सीप, हड्डी, हाथी–दांत आदि की मालाएँ भी बनाते थे।

चित्र और नाच

शिकारी लोग गुफा के अंदर दीवारों पर रंगीन चित्र भी बनाया करते थे। वे रंगीन पत्थरों को घिस कर रंग तैयार करते थे और बांस के ब्रुश से चट्टानों पर चित्र बनाते थे। इन लोगों द्वारा बनाए चित्र भीमवेटका की गुफाओं में पाया गया है। चित्र में ज्यादातर पशुओं जैसे बैल, गाय, भैंस, हिरण इत्यादि के थे। चित्रों के बनाने के अलावा उनके जीवन मे एक और महत्वपूर्ण चीज नाच था। वे सब मिलकर देर तक नाचते थे।

पैसरा का सूक्ष्म–निरीक्षण

पैसरा बिहार के मुंगेर जिले में स्थित है। यहाँ पर आरंभिक मानव से सम्बन्धित पुराने स्थल मिले है। यहाँ से यूरोप (फ्रांस) में पाए जाने वाले आरंभिक मानव के औजारों की तरह के औजार मिले हैं। पैसरा संभवतः आवास और निर्माण स्थल था।

नाम और तिथियाँ

नव पाषाण कालीन हड्डी के औजार
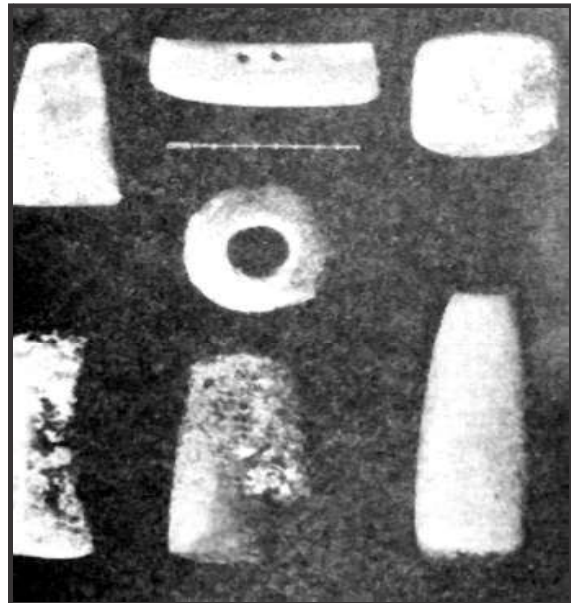
नव पाषाण कालीन पत्थर के औजार

जिस काल के मानव के बारे में आपने ऊपर पढ़ा है उनके जीवन में पत्थरों का स्थान सबसे महत्वपूर्ण था। आप ने देखा कि पत्थर की गुफा, उसके औजार, उसी के आभूषण का प्रयोग वे करते। अतः इस काल को पुरातत्वविदों ने पाषाण (पत्थर) काल का नाम दिया है।

मध्यपाषाण और नवपाषाण काल के औजार

औजार बनाने के तरीकों में और जीवन शैली में आए परिवर्तनों के जो प्रमाण मिले है उस आधार पर पाषाण काल को तीन भागों में विभाजित किया गया है। आरंभिक चरण को पुरापाषाण काल (लगभग बीस लाख साल से 14000 साल पहले तक) कहते हैं। इस समय लोग शिकार और भोजन संग्रहक के रूप में अपना जीवन बिताते थे। आग का आविष्कार एवं स्थायी आवास इसी काल में उन्होंने शुरू किया।

मध्यपाषाण काल

इस काल में पर्यावरणीय बदलाव आए और वातावरण में गर्मी बढ़ी जिसके कारण गेहू, जौ, मडुआ जैसे अनाज स्वयं उग आए तथा कई क्षेत्रों में घास वाले मैदान बनने लगे। घास पर आश्रित शाकाहारी जानवरों की संख्या इस वजह से बढ़ने लगी। इस समय लोगों द्वारा पत्थरों के और अच्छे औजार बनाए गये, जिसे लकड़ी पर लगाकार इस्तेमाल किया जाने लगा। इन परिवर्तनों के आधारपर इस काल को मध्य पाषाण काल कहा गया (लगभग 14000 साल पहले से 8000 साल पहले तक)।

पाषाण काल का अन्तिम चरण नवपाषाण युग के नाम से जाना जाता है। इस युग में मानव के जीवन उनके रहन–सहन तथा कला-कौशल में बड़ा बदलाव आया आप इसके विषय में अगले अध्याय में पढ़ेंगे। इसका काल 8000 साल से 3000 साल तक है।

अभ्यास

आइए याद करें–

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

(क) भारतीय उपमहाद्वीप में आरंभिक मानव के निशान किस राज्य से अधिक मिला है–

(i) बिहार (ii) उत्तर प्रदेश

(iii) मध्य प्रदेश (iv) गुजरात

(ख) प्रारंभिक औजार अधिकांशतः किस चीज से बने होते–

(i) लोहा (ii) पत्थर

(iii) ताँबा (iv) काँसा

(ग) आरंभिक मानव बस्तियों से जुड़ा पैसरा नामक स्थान बिहार के किस जिले में अवस्थित है–

(i) गया (ii) गोपालगंज

(iii) मुंगेर (iv) दरभंगा

(घ) पाषाण काल को कितने भागों में बाँटा जाता है?

(i) चार (ii) तीन

(iii) पाँच (iv) दो

2. खाली स्थान को भरें–

(i) भीमवेतका .... राज्य में है।

(ii) आरंभिक मानव का मुख्य बसेरा .... था।

(iii) पाषाण काल के लोग मनोरंजन के लिए चित्र और .... करते थे।

(iv) .... साल पहले दुनिया की जलवायु गर्म होने लगी।

3. आइए विचार करें–

(i) मानव के आरंभिक काल को पाषाण युग क्यों कहा जाता है?

(ii) आरंभिक मानव इधर–उधर क्यों घुमते थे?

(iii) मध्यपाषाण काल में क्या बदलाव आए?

4. आइए करके देखें

(i) आरंभिक मानव के खाद्य पदार्थों की सूची बनाएँ और आज के भोजन सामग्री से उसकी तुलना करने पर क्या बदलाव आपको दिखता है।

(ii) आज के जीवन में इस्तेमाल किए जाने वाले औजारों की तुलना आरंभिक मानव के औजारों से करें और दोनों में क्या अन्तर और समानता है बताएँ।